उत्तर-पश्चिम भारत में किसानों को धान की खेती न करने के लिए प्रेरित करना चाहिए

हाल ही में इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकॉनॉमिक रिलेशन्स (आईसीआरआईईआर) ने सुझाव दिया है कि पंजाब और हरियाणा के किसानों को धान न उगाने के लिए सब्सिडी दी जानी चाहिए। इससे कई लाभ होने की संभावना है।

कुछ बिंदु -

- अभी होता यह है कि सरकार मुख्यतः धान और गेहूँ की फसल के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करती है। इसके माध्यम से दिए जाने वाले इच्छित मूल्य समर्थन तक पहुंचने के लिए, किसान को पूरे फसल चक्र के खर्च से गुजरना पड़ता है। सब्सिडी देने से किसान का यह खर्च बचेगा।

- अनाज भंडारण में होने वाली बर्बादी से आजादी मिलेगी।

- देश में कम उत्पादन वाली कई फसलों के लिए समर्थन मूल्य दिया जा सकता है

- सिंचाई - उर्वरक और बिजली की लागत का कुछ हिस्सा भारत सरकार वहन करती है, जो बचेगा। पंजाब और हरियाणा में धान के मामले में यह लागत काफी अधिक है।

- अस्थिर कृषि के कारण पारिस्थितिकीय को होने वाली क्षति से बचाव होगा। धान को देश के वर्षा आधारित भागों में पर्यावरण को कम नुकसान पहुँचाते हुए भी उगाया जा सकता है।

- भूमिगत जल-स्तर को ठीक रखने में मदद मिल सकती है।

'द इकॉनॉमिक टाइम्स' में प्रकाशित संपादकीय पर आधारित। 17 जुलाई, 2024